सम्पादकीय

## हिन्दु संस्कृति और वर्तमान भारतीय संस्कृति

कोई व्यक्ति बिना विचार किये बार बार किसी कार्य को करना षुरू कर दे तो लम्बे समय बाद वह कार्य उस व्यक्ति का संस्कार कहा जाता है और किसी समूह विषेश का बहुमत ऐसे संस्कार वालो का बन जावे तो वह उस समूह विषेश की संस्कृति मान ली जाती है ।

संस्कृतियॉ कई प्रकार की है किन्तु इनमे पाष्चात्य, इस्लामिक,हिन्दु और भारतीय संस्कृति तक ही हम विचार मंथन को सीमित करेगे। अन्य संस्कृतियॉ या तो इनके हिस्से कह सकते है या इस चर्चा मे षामिल करना आवष्यक नही समझते।

संस्कृतियो के दो भाग होते है (1) वाध्य (2) परोक्ष या आन्तरिक। वाहय संस्कृति मे मुख्य रूप से खान पान, भोजन,पहनावा, भाशा आदि का समावेष होता है जबकि परोक्ष मे स्वभाव, व्यवहार आदि अनेक बाते षामिल होती है । वाहय संस्कृति का प्रभाव कम असर डालता है और आन्तरिक का गंभीर या दूरगामी।

धार्मिक आधार पर यदि हम विभाजन करें तो पाष्चात्य संस्कृति पर इसाइयों का व्यापक प्रभाव है और भारतीय पर हिन्दू संस्कृति का। हिन्दू धर्म और इसाई धर्म का राज्य व्यवस्था से बिल्कुल सीधा संबंध न होने से इनमें कुछ भिन्नताएँ भी है किन्तु इस्लाम मे धर्म और राज्य के बीच कोई भेद नही होने से दोनो एक रहते है। इसलिये हमने इस्लामिक संस्कृति को एक मानकर विचार मंथन किया है।

वर्तमान पाष्चात्य संस्कृति अन्य संस्कृतियो की अपेक्षा अधिक यथार्थ वादी है । देष काल परिस्थिति अनुसार अपनी नीतियो मे संषोधन करने मे कभी सिध्दान्त आडे नही आता । पूरी दुनिया मे व्यक्ति के जो चार मूल अधिकार 1. जीने का 2. अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का 3. सम्पत्ति का 4. स्व निर्णय का माने जाते है उनके प्रति इन देषो मे कुछ अच्छी समझ है। ये लोग धर्म और विज्ञान के बीच भी अच्छा तालमेल रखते है। स्त्री पुरूश के बीच आपसी व्यवहार के मामले मे भी ये अधिक व्यावहारिक और प्रत्यक्ष होते है। ये व्यक्ति, परिवार और समाज के बीच संतुलन बनाने मे परिवार और समाज की अपेक्षा व्यक्तिवाद की ओर अधिक झुके हुए होते है। दूसरी संस्कृति के लोगो को अपनी बात समझाने मे ये तर्क या हिंसा का सहारा न लेकर सेवा और प्रेम का सहारा लेना अधिक पसन्द करते है। इनकी जीवन पद्धति में लोकतंत्र स्पश्ट दिखाई देता है।

पाष्चात्य संस्कृति मे कुछ कमजोरियॉ भी है । ये संख्या विस्तार के लिये धन का प्रयोग बुरा नही मानते। ये दूसरो को अपने पक्ष मे करने के लिये धन का भरपूर प्रयोग करते है। ये परिवार प्रणाली को कमजोर करते जा रहे है। ये भौतिक प्रगति को मानसिक आध्यात्मिक उन्नति की अपेक्षा बहुत अधिक महत्व देते है। इनमे अन्य देषो या समाजो की अपेक्षा कूटनीति बहुत अधिक पायी जाती है ।

यदि हम इस्लामिक संस्कृति पर विचार करे तो वह पाष्चात्य या हिन्दू संस्कृति से बिल्कुल भिन्न होती है। इनके अन्दर अच्छाई खोजना बहुत कठिन काम है । इस्लाम न धर्म है न समाज। इन्हें एक संगठन से अधिक और कुछ कहना उचित नही, यधपि पूरी दुनिया मे इन्हे धर्म भी कहा जाता है और समाज भी। संगठन के सभी गुण अवगुण इनमें विधमान है। ये आम तौर पर न तर्क षक्ति पर विष्वास करते है न धन षक्ति पर । ये विष्वास करते है बल षक्ति पर। ये संगठन षक्ति को सफलता का इस सीमा तक आधार मानते है कि खान पान रहन सहन वेश भूशा, पूजा पद्धति आदि सब जगह इसका बहुत ध्यान रखते है। इस कार्य के लिये ये साफ सफाई तक का ज्यादा ध्यान नही रखते। जहॉ भी ये कमजोर होते है वहॉ ये न्याय की बात करते है और जहॉ मजबूत होते है वहॉ स्वय को सषक्त करने की। लडकियों को षिक्षा देने मे तो ये कई बार सोचते ही है, लडको को भी षिक्षा देने मे ये दूसरो की अपेक्षा मदरसा, उर्दू या कुरान का विषेश ध्यान रखते है किन्तु जब ये प्रगति मे पिछड जाते है तब तुलनात्मक प्रगति के लिये सच्चर सरीखा आयोग बनवाकर आरक्षण की मांग षुरू कर देते है। ये अपनी कमाई और श्रमका हिस्सा तो गरीब होते हुए भी धर्म, संगठन और इस्लामिक भाईचारा पर खर्च करते है तथा गरीबी का कारण भी दूसरो पर थोपने मे परहेज नही करते । ये पूजा पद्धति, समाज व्यवस्था तथा राज्यव्यवस्था तक में देष काल परिस्थिति अनुसार संषोधन नही कर सकते क्योकि ऐसी समीक्षा या संषोधन के लिये इनके द्वार हमेषा के लिये बन्द है। ये समान नागरिक संहिता को नही मानते बल्कि पुरूश प्रधानता का कडाई से पालन करते है। ये मरने के लिये भी तैयार रहते है और मारने के लिये भी। ये अपने धर्मके लिये जिसे हम संगठन मानते है उसमे विस्तार के लिये योजना पूर्वक धन श्रम या जान तक देने मे हमेषा तैयार रहते है ।

हिन्दू संस्कृति की यदि हम बात करें तो वह लगातार धीरे धीरे कमजोर होती जा रही है। भारत को छोडकर अन्य किसी देष मे इसका निर्णायक प्रभाव नही। इस संस्कृति मे कई व्यापक गुण है। यह धर्म समाज और राज्य को बिल्कुल पृथक पृथक करके देखती है । इसने कभी संख्या बल को महत्व नही दिया। यहॉ तक कि पूरी दुनिया मे यह अकेली ऐसी संस्कृति है जिसने संख्या विस्तार मे अपने प्रयत्न के दरवाजे एक तरफा बन्द कर रखे है, ऐसे समय मे भी जब इनकी कमजोरियो का लाभ उठाने में दूसरे लोग बडी बेषर्मी से प्रयत्न करते रहते है । ये सयुक्त परिवार व्यवस्था के प्रबल पक्षधर है। ये सांगठनिक धर्म की अपेक्षा व्यक्तिगत धर्म पर ज्यादा जोर देते है।

दो हजार वर्श, जबसे पाष्चात्य या इस्लामिक संस्कृतियॉ आगे आई, उससे पूर्व हिन्दु संस्कृति बहुत विकसित थी या पिछडी हुई यह मेरा चर्चा का विशय नही । दो हजार वर्शो का जो इतिहास उपलब्ध है उसके अनुसार हिन्दू संस्कृति ने भी अपने संषोधन के द्वार बन्द कर लिये । वर्ण व्यवस्था और जाति व्यवस्था ने समाज व्यवस्था का तर्क संगत स्वरूप छोडकर संगठन का रूप ग्रहण कर लिया। परिवार व्यवस्था मे भी महिलाओ के समान अधिकार में कटौती की गई । नीतियॉ बनाने मे व्यावहारिक मार्ग की अपेक्षा सिद्धान्तो को ज्यादा महत्व दिया गया। संषोधन के अभाव मे आन्तरिक बुराइयॉ धर करने लगी, किन्तु दूसरो के मामलो में हिन्दु संस्कृति ने आज तक उदारता का ही परिचय दिया है। यह उदारता इनके मन मे इतनी गहराई तक बैठी हुई है कि सैकडो वर्शो से इस उदारता को हानिकर और धातक सिद्ध करने के संध परिवार या आर्य समाज के प्रयत्नो का भी अब तक कोई

खास असर नही हुआ है । आज तक नही जब इसाइयत या इस्लाम लगातार इनके लोगो को तोडते भी रहते है और साथ साथ इनकी मूर्खता का मजाक भी उडाते रहते है।

अब हम चर्चा करें भारतीय संस्कृति की जो वर्तमान समय मे भारत मे विधमान है। भारतीय संस्कृति में महत्वपूर्ण अंष तो हिन्दु संस्कृति का ही है किन्तु धर्म निरपेक्ष षासन व्यवस्था होने से इसमे इस्लाम और इसाइयत का भी प्रभाव षामिल है जो भले ही कम हो किन्तु है तो अवष्य ही। भारतीय संस्कृति धीरे धीरे सिद्धांतचाद को छोडकर यथार्थवाद की ओर बढ रही है। परिवार व्यवस्था और समाज व्यवस्था कमजोर होकर व्यक्तिवाद बढ रहा है। आध्यात्म लगातार भौतिकवाद की तरफ सरक रहा है। सबसे अधिक खतरनाक बुराई सम्पूर्ण भारत मे यह बढी है कि ये अपनी सफलता के लिये चालाकी को किसी भी सीमा तक उपयोग करने को अच्छा मानने लगे है। यह बुराई भारतीय संस्कृति मे बढती ही जा रही है। जो लोग भारतीय संस्कृति मे आई गिरावट का कारण पाष्चात्य या इस्लामिक संस्कृति मे खोजने का प्रयास करते है वे बताने की कृपा करे कि इस छल कपट की बुराई वृद्धि मे किसका कितना हाथ है? स्वाभाविक है कि यह बुराई न पष्चिम से आई है न इस्लामिक संस्कृति की देन है । हिन्दु संस्कृति मे भी चाहे और जो भी कमियॉ रही हो किन्तु यह बुराई तो नही थीं । यदि हम वर्तमान भारतीय संस्कृति की वर्तमान गंभीर बुराई को खोजना षुरू करे तो यह गंभीर बुराई किसी अन्य संस्कृति से न आकर हमारी भारतीय राजनैतिक व्यवस्था से आई है और लगातार चुपचाप आती जा रही है। जिस भी व्यवस्था मे कानून अधिक होगें और नियत्रण की व्यवस्था कम वहॉ भश्टाचार बढता ही है । यह एक स्वाभाविक प्रकिया है । भारत मे कानून तो नित नये नये कुकुरमुत्ते की तरह बन रहे है और भ्रश्टाचार की रोकथाम की उतनी मजबूत व्यवस्था न है न होना संभव है। परिणाम स्वरूप भश्टाचार दिन दूना रात चौगुना बढता जा रहा है। जिस तरह भश्टाचार बढ रहा है उसी मात्रा मे भश्टाचार से बचने की चालाकी भी बढ रही है । जो चालाकी नही करता उसे मूर्ख माना जाने लगा है। यह एक मात्र कारण है जिसने वर्तमान भारतीय संस्कृति को इस दिषा मे कलंकित किया है । न इसमे हिन्दुत्व का दोश है न पष्चिम का । दोश है तो सिर्फ अपनी षासन व्यवस्था का जिसका तत्काल समाधान होता नही दिखता।

यदि हम अपनी समीक्षा करें तो राज्य पद्धति की लाइलाज बीमारी को छोडकर भारतीय संस्कृति के लिये उचित क्या है? इस्लामिक संस्कृति की ओर मुह करे या पष्चिम की ओर । मेरे विचार मे दोनो ही संस्कृतियो के कुछ अलग अलग गुण दोश है । किसी एक से चिपटना न उचित है न संभव। अच्छा तो यही होगा कि हम हिन्दू संस्कृति के सिद्धान्तवाद को पष्चिमी संस्कृति के कठिन यथार्थ वाद से जोडकर अपनी राह बनावें। हम न आध्यात्म के मार्ग से चिपटे रहे न भौतिकवाद के आकर्शक राह पर ही दौडना षुरू कर दें। हम करें सिर्फ यही कि हिन्दू धर्म को विज्ञान के साथ तालमेल करके भारतीय संस्कृति को आगे बढाने का काम करें। हम अनावष्यक कानूनो को समाप्त करके परिवार गांव जिले को अधिकतम अधिकार सौप दे तब संभव है कि हमारी भारतीय संस्कृति अपने कलक से भी मुक्त हो जावे और बीच का कोई सम्मान जनक मार्ग निकाल लें।

## विशेश आलेख

### आत्म प्रवंचक यजमान मतदाता और मतदान का महापर्व

महेष भाई

सोलह

फरवरी दो हजार नौ के दैनिक हिन्दुस्तान के मुख पृश्ठ पर '' मतदान का महापर्व उर्फ ग्रेट इन्डियन वोट मेला'' षीर्शक सम्पादकीय पढा। हिन्दुस्तान जैसे महत्वपूर्ण समाचार पत्र के प्रथम पृश्ठ जैसे महत्वपूर्ण स्थान पर सम्पादकीय रूप मे कोई विचार छपने का अर्थ ही होता है अति विषिश्ट विशय पर विचार करना। और मैने भी उतनी ही गंभीरता से समीक्षा करना उचित समझा ।

सम्पादकीय से यह बात स्पश्ट होती है कि मतदान भारत की जनता के लिये कितना उपयोगी कितना आवष्यक है। जब हमें पांच वर्शो मे एक बार अपना मालिक, अपना भाग्यविधाता चुनने का अवसर मिलता है तो उस दिन हमारा पुराना और आगे होने वाला मालिक एक दिन के लिये हमे भी मालिक होने का अहसास कराता है । ऐसा दिन महापर्व से भी अधिक महत्वपूर्ण मानने मे हमे आपत्ति भी नही होनी चाहिये। सम्पादकीय गंभीरता पूर्वक मतदान के महत्व को रेखांकित करता है। सम्पादकीय एक प्रकार का स्वैच्छिक विज्ञापन है जो मतदाताओ को प्रेरित करता है कि वे मतदान को एक धार्मिक सामाजिक कार्य मानकर अवष्य करें।

एक तरफ हमारे संवेदन षील लोक सभा अध्यक्ष द्वारा संसद के सामान्य व्यवहार के आकलन के पांच वर्शो बाद की टिप्पणी है और दूसरी ओर है विद्वान सम्पादक द्वारा उसी प्रणाली को उसी स्वरूप मे महापर्व धोशित करने का उत्साह। एक मे अध्यक्ष जी हुडदंगी सांसदो को हार जाने का श्राप देते है तो दूसरी ओर महापर्व वैसे ही लोगो को फिर से चरित्रवान आदर्षवान का प्रमाण पत्र देकर नये अंदाज मे श्राप मुक्त कर देगा। इस महापर्व मे श्रापमुक्त होकर संसद मे बैठने वाले लोगो का स्तर क्या उनसे भिन्न होना संभावित है जैसा पूर्व मे था? क्या अपने किये कार्य का औचित्य सिद्ध करने का अधिकार भी उन्ही के पास सुरक्षित नही जो वैसे कार्य कर रहे है। किसी षायर ने कहा था कि

यकी यह है कि राज खुल रहे है<br>
गम है कि धोखे खा रहे है।

हिन्दुस्तान के सम्पादकीय के माध्यम से इस मतदान को महाकुंभ सरीखा महिमा मंडित करके जिस कुंभ मे भाग लेने की सिफारिष की गईहै उसका यजमान कौन है, पण्डा पुजारी कौन है यह विचारणीय है। प्रत्येक पांच वर्श मे हम यजमान के रूप मे इस महाकुंभ मे किसी पंडे पुजारी के माध्यम से लोकतंत्र रूपी भगवान के प्रति अपनी आस्था व्यक्त करते है । इस आस्था व्यक्त करने के कार्य के लिये ही हिन्दुस्तान समाचार पत्र या अन्य अनेक विद्वान महाकुंभ बता कर षत प्रतिषत तक षामिल होने की बात कर रहे है। इस महाकुंभ के बीतते ही चार वर्श ग्यारह माह उन्तीस दिन तक यही सब कुंभ प्रषंसा करने वाले लोग इन नियुक्त पंडे पुजारियॉ के विरूद्ध यजमानो को कोसते रहते है और महाकुंभ के दिन ऐसे ही किसी पंडे पुजारी के माध्यम से लोकतंत्र के प्रति

आस्था व्यक्त करने की सिफारिषी चिटटी लिखने मे भी आगे आगे रहते है। विचारणीय यह है कि क्या हम कोई ऐसा मार्ग नही खोज सकते कि बिना पंडे पुजारी के भी भगवान की पूजा संभव हों? यदि ऐसा मार्ग है तो उस मार्ग पर चलने की आवष्यकता है और यदि नही है तो ऐसे भगवान ऐसे महाकुंभ ऐसे महापर्व को नकारने के अतिरिक्त क्या मार्ग है? जिस हिन्दुस्तान ने सम्पादकीय लिखकर मतदान को महाकुभ के रूप मे महिमामंडित करने की सिफारिषी चिठठी लिखी है उसी हिन्दुस्तान ने कुछ दिन पूर्व के सम्पादकीय मे अपेक्षा की थी कि जयप्रकाष जी सरीखा कोई व्यक्तित्व षीध्र ही उभरेगा और वर्तमान राज काज प्रणाली का कायाकल्प कर देगा। एक जादुई यंत्र की क्षमता उस व्यक्तित्व में होगी।

आपने (बजरंग मुनि जीने) लोक स्वराज्य के नाम से भगवान और यजमान के बीच से इस पंडे पुजारी रूपी बिचौलिया प्रथा को समाप्त या संषोधित करने की आवाज उठाकर एक आषा की किरण जगाई है। पहली बार किसी ने इतने स्पश्ट षब्दो में धोशणा की है कि '' भारत की सम्पूर्ण संवैधानिक व्यवस्था षरीफों गरीबो श्रमजीवियो तथा सामान्य नागरिको के षोशण के उदेष्य से अपराधियो वुद्धिजीवियो, पूॅजीपतियो तथा राजनेताओ का मिला जुला पडयंत्र है । हम आप भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से यथास्थिति को मतबूत करने के सहयोगी है। यथास्थिति को तोडने हेतु सम्पूर्ण भारत मे एक वैचारिक बहस छेडने मे सहयोग करिये''। आपका लिखा एक एक षब्द बहुत महत्वपूर्ण है। मुझे तो लगता है कि पडयंत्र मे कही न कही मीडिया भी षामिल हो गया है।

मुझे लगता है कि आप भी मतदान को महापर्व की संज्ञा देकर षतप्रतिषत मतदान की सिफारिष कर सकते थे और इस महाकुंभ के यजमानो से कुछ पंडे पुजारियो को मुहर लगवाकर पांच वर्शो तक उन पंडे पुजारियो के साथ मिलकर वर्तमान व्यवस्था मे साझीदारी कर सकते थे। किन्तु आपने वैसा न करके आहवान किया कि जो पंडा पुजारी यजमान को सीधे भगवान से मिलने की छूट देने की धोशणा और व्यवस्था करे वही हमारे कुंभ मे हमारा पंडा हो सकता है। आप लगातार यह संदेष देते धूम रहे है। पहले तो पडयंत्र कारियो ने ध्यान देने की जरूरत ही नही समझी किन्तु अब धीरे धीरे लोग समझने और जुटने लगे है। लोक स्वराज्य योजना के विरूध यदि कोई संगठन प्रस्ताव पारित करे तो वह प्रमाण है कि समाज मे लोक स्वराज्य के पक्ष मे जनमत जागृत हो रहा है । निष्चय ही ऐसे जागरण से आपको प्रोत्साहन मिलेगा और सफलता निकट होती जायगी। एक तरफ आप आहवान कर रहे है कि इस लोक तांत्रिक यथास्थितिवादी व्यवस्था को बदलने के लिये ''जो धर जारे आपना चले हमारे साथ'' वही दूसरी ओर अपराधियो पूॅजीपतियो वुद्धिजीवियो राजनेताओ तथा मीडिया कर्मियो का एक सषक्त गठजोड है जो भारतीय लोकतंत्र के नाम से समाज को पांच वर्शो तक सपनो मे सुख की नींद का आष्वासन देता है और पांच वर्श मे एक दिन के लिये उन्हे जगाकर उन सपनो के सच पर मुहर लगवाने की अनेक प्रकार की तिकडमें करता है। विचारणीय प्रष्न यह है कि इस तथाकथित महाकुंभ मे यजमान और भगवान की भी कोई भूमिका है या यजमान और भगवान के बीच पंडेपुजारियो का पांच वर्शो तक यथास्थिति बनाये रखने का आष्वासन ही सब कुछ है। स्वाभाविक है कि वर्तमान व्यवस्था आम मतदाता को साठ वर्शो से चली आ रही यथास्थिति पर मुहर लगाने के अतिरिक्त कुछ भी नही है चाहे इसे महाकुंभ कहकर महिमा मंडित करें या कुछ और । वास्तविक महाकुंभ तो वह होगा जिसमें आम मतदाता को लोक नियुक्त तंत्र या लोक नियत्रित तंत्र मे से किसी एक पर मुहर लगाने की स्वतंत्रता हो या जिसमे छ प्रष्नो के उत्तर खोजने की भावना समाहित हो

1 भारतीय संविधान जो षक्तिया संसद और विधान सभाओ को देता है वैसी कुछ षक्तियॉ परिवार गाव और जिले को भी दे
2 संविधान मे जो भी नीति निर्देषक सिद्धान्त षामिल हो वे राज्य के लिये स्वैच्छिक न होकर बाध्यकारी हों
3 निर्वाचित जन प्रतिनिधि को वापस बुलाने की कोई व्यवस्था हो
4 ना पंसद उम्मीदवारो को नकारने का भी तरीका हो
5 सभी दलो को नकारने केबाद कोई न्यायाधिकरण ऐसे राजनैतिक दलो की मान्यता समाप्त करने पर भी विचार कर सके
6 कोई भी अन्तर्राश्ट्रीय समझौता संसद की स्वीकृति के बाद ही लागू हो।

यदि हिन्दुस्तान के विचारक लोक नियंत्रित तंत्र के लिये कुछ सोच और कर सकते है तब तो किसी सम्पादकीय का कोई अर्थ है अन्यथा यदि लोक नियुक्त तंत्र का जुआ ही ढोते रहना हमारी मजबूरी है तो ऐसी मजबूरी का फायदा उठाने वाले मे षामिल होकर पांच वर्श मे एक बार चिठठी लिखने का अपना फर्ज निभाते रहिये। क्या करना है यह तय आप करेगें हम नही। एक तरफ है एक सौ दस करोड जनता जो प्रति पांच वर्श यजमान के रूप मे मतदान के लिये साठ वर्शो से हाजिर होते रहने का अपना फर्ज निभा रही है, दूसरी ओर कुछलाख राजनीतिज्ञ रूपी पंडे पुजारी जो इन एक सौ दस करोड लोगो का लोकतंत्र के नाम पर दान प्राप्त कर रहे है और तीसरी श्रेणी मे है मीडिया कर्मी पूॅजीपति अपराधी वुद्धिजीवी आदि जो पांच वर्शो तक इस व्यवस्था को गाली दे देकर उससे ज्यादा से ज्याद सुविधाऍ प्राप्त करने की कोषिष मे लगे रहते है तथा एक दिन के लिये इन एक सौ दस करोड को ऐसे मतदान मे षामिल होकर तथा दान की प्रेरणा देकर पांच वर्शो तक प्राप्त सुविधाओ के बदले एक दिन का कर्तव्य पूरा कर देते है।

प्रोफेसर पुश्पेष पंत जी ने भी अपने आलेख चुनावी जोड तोड की लफ्फाजी और सच के अन्तर्गत ऐसे ही निश्कर्श निकाले है कि '' जब भी देष किसी निर्णायक मोड की ओर बढने लगता है तो बडे बडे नेता और राजनैतिक दलो के लोग या दल उसे फिर अन्धी गली के मोड तक पहुॅचाने की जी तोड कोषिष षुरू कर देते है। राजेन्द्र धोपडकर जी तो इससे भी आगे बढकर लिखते है कि यदि मीडिया के भरोसे रह गये तो न गरीबी का पता चलेगा और गरीबो का । अन्य कई लोगो ने भी इस संबंध मे सोचना षुरू किया है जो एक षुभ लक्षण है। मेरी इच्छा है कि आप (अर्थात बजरंग मुनि जी) तथा ऐसे ही अन्य लोग धीरे धीरे विचार मंथन करे, निश्कर्श निकालें, संगठित हो तथा लोकतंत्र के पेषेवर पंडे पुजारियों को चुनौती दे कि अब यथा स्थिति के विरूद्ध व्यवस्था परिवर्तन का भी झडा गडेगा। इसलिये लोक नियुक्त के गुलामी वाले लोकतंत्र के व्यामोह से देष को मुक्त कराना होगा और विचारको, वुद्धिजीवियो, श्रमजीवियो, पूॅजीपति, मीडिया तथा राजनीतिको सहित तमाम स्वतंत्र समाज सेवियो को जो खड खड उदेष्यो के साथ बिखर कर अपना राग अलाप रहे है एक साथ बैठक कर लोकतंत्र की चिन्ता करनी होगी। लोक नियंत्रित लोकतंत्र की यीसिस लिखनी होगी जिसका षुभारंभ आपने श्री बजरंग मुनि ने कर दिया है। लोक नियंत्रित लोकतंत्र का प्रारूप देष

KAASHINDIA

के लिये चुनौती बन गया है। आइये महापर्व के धाट के यजमानो को सजग बनावें कि महापर्व का यजमान बनना फिर उसी जाल मे फॅसना है जिसमें फॅसकर देष की तीन जवान पीढियॉ अपनी अंतिम सॉसें गिन रही है।

महापर्व के धाट पर जाने वाले यजमानो को यह तय करके धाट पर जाना चाहिये कि लोकतंत्र लोक नियुक्त चाहिये या लोक नियंत्रित`?

विजयीपुर
जिला गोपालगंज बिहार

समीक्षा

आपने इस लेख मे जितनी गंभीरता से विचार स्पश्ट किये उतनी गंभीरता से तो षायद मै भी नही कर पाता। मतदान समर्थको, विषेश कर रामदेव जी को यह लेख पढकर उत्तर देना चाहिये। आजकल पूर्व राश्ट्रपति अब्दुल कलाम जी ने भी सलाह देनी षुरू की है कि हम अच्छे लोगो को वोट दें। क्या हमारे प्रयासो के बाद भी सन पचास या साठ सरीखे अच्छे लोगो की संसद बन पायेगी? यदि सन पचास साठ सरीखी अच्छे लोगो की संसद बुराई को बढने से नही रोक पाई तो अब कुछ अच्छे लोगो को संसद मे पहुँचाने की मुहिम क्या परिवर्तन कर पायेगी? यह अधिक बुरे की अपेक्षा कम बुरा तो होगा किन्तु समस्या का समाधान नही है । रामदेव जी का सुझाव तो और भी अधिक बचकाना है। इनकी अपेक्षा तो अब्दुल कलाम जी का कथन ही अधिक ठीक है। षत प्रतिषत मतदान द्वारा रामदेव जी क्या सुधार की उम्मीद कर रहे है यह बात उन्हे स्पश्ट करनी चाहिये।

मैने सन पैंसठ मे नगरपालिका अध्यक्ष बनते ही समझ लिया था कि दोश व्यवस्था मे है, व्यक्तियो मे नही। व्यवस्था को बदलने की जरूरत है। किन्तु मै यह नही समझ पाता था कि व्यवस्था मे क्या बदलाव हो । मै समझता रहा कि लोहिया जी का गैर कांग्रेसवाद ही समाधान है। मै लोहिया जी के विचारो को सबसे अधिक ठीक मानता था। गांधी जी को मैने न पढा न समझा। कांग्रेस की जगह जब हम पावर मे आये तब लगा कि सत्ता परिवर्तन और व्यवस्था परिवर्तन एक नही है किन्तु क्या परिवर्तन हो यह समझने के लिये पद्रह वर्श जंगल मे बैठना पडा तब यह बात समझ मे आई। मैने सन पैसंठ मे ही अपने लोगो को कहा था कि जिनको वर्तमान व्यवस्था से कोई लाभ की उम्मीद न हो वे समय बर्बाद न करें। मै आज भी इसी विचार का हूँ। चुनाव के तीन उदेष्य होते है 1 अच्छे व्यक्ति को सत्ता सौंपना 2 अच्छे राजनैतिक दल को सत्ता सौंपना 3 लोकतंत्र पर मुहर लगाना। वर्तमान राजनैतिक चुनाव दो तक ही सिमट जाते है, तीसरे पर बहस छिडती ही नही। क्यो कि तीसरे को तो अन्तिम सत्य ही मान लिया गया है। न आज तक के साठ वर्शो मे कभी बहस छिडी न वर्तमान चुनाव मे ही छिड पा रही है। स्वतंत्रता के बाद आज तक किसी ने तीसरे प्रष्न को ठीक से समझा ही नही। षायद लोहिया जी जीवित होते तो संभावना हो सकती थी किन्तु पक्के तौर पर नही कह सकते । एकमात्र जय प्रकाष जी षुरू से ही समझते थे किन्तु अकेले पड गये और अन्त मे उन्होने अपने सोच से समझौता कर लिया। अब इस तीसरे प्रष्न पर बहस का समय आ गया है। मृणाल पांडे या अन्य अनेक सामान्य लोग यदि पहले और दूसरे मुददे तक सीमित रह जावें तो कोई खास चिन्ता का विशय नही क्योकि न तो इनकी इसके आगे की क्षमता है न ही इनके कथन से बहुत बडी क्षति होने वाली है । किन्तु यदि रामदेव जी और कलाम जी सरीखे लोग तीसरे मुददे को किनारे करके दो मुददो तक सिमट जावें तो यह हमारा दुर्भाग्य ही कहा जायगा।

आपने बिल्कुल साफ प्रष्न उठाया है कि हम पंडे पुजारियों के बिना भी सीधा मंदिर मे जाने का अधिकार रखते है या नही। वर्तमान राजनैतिक व्यवस्था मे तो हमे यह अधिकार नही। जब तक हम किसी को चुनते नही तब तक लोकतंत्र कैसा? ए.बी. सी.डी. किसी भी व्यक्ति को चुनिये या किसी भी दल को चुनिये । यदि नही चुने और अपना वोट अपने पास रख लिये तो लोकतंत्र कमजोर हो जायगा। साठ वर्शो से ये लोकतंत्र के एजेन्ट हर चुनाव मे यही कहकर हमसे अपना मतदान करवा देते है और हम अपने ही हाथों पांच वर्श के लिये अपनी गुलामी पर मुहर लगा देते है। इससे तो अच्छे वे लोग है जो मतदान करते समय तत्काल ही कुछ ले लेते है और भविश्य के लिये अफसोस नही करते| मेरी तो हार्दिक इच्छा है कि मतदान के पूर्व तीसरे मुददे पर बहस छिडे। हमे पंडे पुजारी वाली व्यवस्था का लोकतंत्र नही चाहिये । हमे चाहिये सीधा लोक स्वराज्य जिसमे कोई बिचौलिया न हो। यदि किसी कुंभ मे ऐसी व्यवस्था हो तो हम अपने मत का दान करेगे अन्यथा ऐसे कुंभ या महाकुंभ मे जाने का पाप क्यों करेगें।

एक राजा ने यदि हमे निर्दोश होते हुए भी फांसी का हुक्म दे ही दिया और अन्त मे हमे छूट दे दी कि सात जल्लादो मे से किसी एक को चुन लो जिसकी फांसी देने की प्रणाली तुम्हे ठीक जचे। साठ वर्शो से तुम्हे सभी प्रणालियों का अच्छा ज्ञान है। यदि इन जल्लादों मे से कोई ऐसा विष्वसनीय हो जो आपको गुप्त रूप से फांसी से बचाव का मार्ग बता सके तो ठीक अन्यथा जल्लाद चुनने की आवष्यकता ही क्या है ?

ये बाबा रामदेव जी या कलाम जी जल्लाद चुनने की प्रक्रिया मे अवष्य भाग लेने की वकालत कर रहे है। मै ऐसी वकालत के न पक्ष मे हूँ न विपक्ष मे । या तो व्यवस्था परिवर्तन का विकल्प दिखे तब मतदान करिये या कुछ प्रत्यक्ष लाभ दिखे तब मतदान करिये। यथा स्थिति के पक्ष मे मतदान का कोई औचित्य नही है । स्वामी दयानन्द जी ने लिखा है कि कुपात्र का दिया गया दान दाता को भी नर्क का द्वार दिखाता है। सोच समझकर दान करिये अन्यथा मत करिये यह मेरी सलाह है। प्रष्न उठता है कि प्रत्यक्ष लाभ का मेरा आषय क्या है? मेरा आषय बिल्कुल स्पश्ट है । यदि व्यवस्था परिवर्तन का तीसरा मुददा नही है और आपकी इच्छा वोट देने की है तो जो अच्छा आदमी हो या आपका इतना निकट का हो कि कभी आपके काम आ सके या तत्काल ही आपको कुछ लाभ करा दे तो आप लाभ लेकर कोई पाप नही कर रहे। गुलामी पर मुहर लगानी है तो जो लाभ मिले वही ठीक है । यदि आप धूस लेकर भी वोट दे तो मन मे अपराध भाव मत पालिये क्योकि इस मतदान से कोई व्यवस्था वदलनी तो है ही नही उल्टे यथा स्थिति के पक्ष मे आपकी मुहर अवष्य लग जाती है। इसलिये जो भी करिये सोच समझ कर करिये । वर्तमान व्यवस्था के पक्ष मे बहकाने वाले एजेन्टों से सावधान रहिये।

KASHINDIA

# अपनो से अपनी बात

अब तक ज्ञान तत्व मे दो स्थायी स्तंभ जाते है 1. पूर्वार्ध और 2. उत्तरार्ध। पूर्वार्ध मे मानसिक व्यायाम, विचार मंथन, आदि को लक्ष्य बनाकर लिखा जाता है जो मुख्य रूप से अम्बिकापुर कार्यालय से मेरे द्वारा लिखा जाता है। इसमें संगठन को होने वाली लाभ हानि का विषेश ध्यान नही रखा जाता है। क्योकि उसमें मेरे व्यक्तिगत विचार ही मुख्य होते है, किन्तु उत्तरार्ध मे जो भी लिखा जाता है वह लोक स्वराज्य योजना के निमित्त होता है जिसमें आंदोलन की बाते विषेश रूप से षामिल रहती है। उत्तरार्ध का अधिक भाग दिल्ली कार्यालय से लिखा जाता है जो दुबे जी लिखते है और अम्बिकापुर से कम।

अब पचीस दिसम्बर के बाद पूर्वार्ध को ही दो भागों मे बांटा जा रहा है 1 विचार मंथन 2. अपनो से अपनी बात। पहला भाग तो यथावत जा ही रहा है किन्तु दूसरा भाग भी भेजना षुरू कर रहे है जिसमे व्यावहारिक विशयों पर मेरे विचार मुख्य रूप से जायेगे। यह स्तंभ पहले भी कभी कभी जाता था जो अब और व्यवस्थित होकर जायगा।

पचीस दिसम्बर के बाद नवीनतम प्रगति यह हुई है कि हमारे प्रिय साथी ओमपाल जी मेरठ ने अपना एक दो वर्शो का समय हमारे कार्य को देना स्वीकार किया है । मुझे स्वास्थ्य संबंधी कारणो से एक ऐसे मित्र की गंभीर आवष्यकता थी जो मेरे स्थान पर देष भर का भ्रमण कर सके , ज्ञानयज्ञ परिवार, लोक स्वराज्य अभियान व्यवस्था परिवर्तन अभियान व्यवस्था परिवर्तन मंच आदि संगठनो का आपस मे तथा उनका मेरे साथ भी सामंजस्य बिठा सकें। इस तरह ओमपाल जी मेरे तथा अन्य संगठनो के बीच पुल का भी काम करेगें तथा सभी संगठनो की सहायता भी करते रहेगे। वे ज्ञान यज्ञ परिवार के पूर्णकालिक संगठन मंत्री के रूप मे काम करेगे जिनका मुख्य कार्यालय तो अम्बिकापुर ही रहेगा किन्तु उनका रहना अम्बिकापुर नही के बराबर ही रहेगा क्योकि वे अधिकांष तो यात्रा पर ही होगें। अपने सभी संगठनो तथा साथियो से निवेदन है कि वे लोक स्वराज्य या ज्ञान यज्ञ के कार्यो के लिये उन्हे सहयोग दे और उनका सहयोग लें जिससे उनकी सेवाओ का उपयोग किया जा सके।
उनका पता तथा फोन नम्बर इस प्रकार है

श्री ओम पाल सिंह, के 4230 षास्त्री नगर, मेरठ यू.पी.
फोन नम्बर– 09411826498

ज्ञानतत्व अंक एक सौ तिहत्तर मे मैने लक्ष्य प्राप्ति तथा सर्वोदय प्रस्ताव को मिलाकर दो लेख लिखे। दोनो को मिलाकर पक्ष विपक्ष मे गंभीर प्रतिक्रिया हुई। पक्ष विपक्ष मे क्या हुआ यह चर्चा बाद में कभी होगी किन्तु इस सम्बन्ध मे मुझसे कई और प्रष्न हुए, जानकारियॉ चाही गई या मार्ग दर्षन मांगा गया , उनकी चर्चा आवष्यक है। कुछ महत्वपूर्ण प्रष्न इस प्रकार उठेः–

1. सेवाग्राम मे पारित प्रस्ताव के केन्द्र राही जी न होकर गंगा प्रसाद जी अग्रवाल थे। उनके विशय मे धारणा क्या है? राही जी की चर्चा क्यों?
2. इतना बडा आंदोलन चलाने की योजना मे सर्वसेवा संध सरीखी संस्था पर इतनी निर्भरता क्यो?
3. गोविन्दाचार्य जी ने नोटा अर्थात नकारात्मक मत प्रावधान तथा विदेषों मे जमा गुप्त भ्रश्ट धन को वापस लाने के प्रयत्न को मुख्य मुदद्दा बनाया है। इस संबंध मे
4. रामदेव जी की भ्रश्टाचार मुक्ति योजना
5. बंग जी के नेतृत्व मे आंदोलन की सफलता की संभावना
6. पच्चीस दिसम्बर से आपके किनारे होने के बाद हम क्या करे?

व्यक्ति तीन प्रकार के होते है चालाक, षरीफ,और समझदार। राही जी चालाक माने जाते है और गंगा प्रसाद जी षरीफ । चालाक उपयोग करता है और षरीफ उपयोग होता है। समझदार लोग तो बिरले ही होते है जो यथार्थ के आधार पर काम करें अर्थात न दूसरो को ठगें न स्वय को ठगे जाने दें।

बीस वर्श पूर्व जब मेरा सम्पर्क राही जी और बंग जी से हुआ तभी राही जी ने मुझे एक खतरनाक व्यक्ति समझ लिया था क्योकि उनकी नजर मे मै व्यवस्था परिवर्तन में मजबूत सक्रियता की क्षमता रखता था। उन्होने पूरी ताकत से विरोध करना षुरू किया। बंग जी ने मेरी क्षमता को एक गुण के रूप मे माना और राही जी ने यथास्थिति मे एक बाधा के रूप मे। यह समझना आवष्यक है कि राही जी और बंग जी दोनो ही बहुत कम समय मे पहचानने की परख रखते है । गंगा प्रसाद जी एक सीधे साधे व्यक्ति है जो दूर तक परखने मे कमजोर है। बंग जी हमेषा ही संधर्श षील सिद्धान्त वादी त्यागप्रधान सामंजस्य वाले माने जाते है तो राही जी लडाकू चालाक सुविधा भोगी व्यक्ति के रूप मे। गंगा प्रसाद जी व्यक्तिगत आचरण मे पूरी तरह राही जी से भिन्न बंग जी के समान है किन्तु उनका स्वभाव रचना धर्मी रहा है, संधर्श षील नही। उन्होने गांधी को भी उसी रूप मे समझा है। इस आधार पर वे बंग जी से सहमत नही। गंगा प्रसाद जी ने गांधी को समाज सुधारक तथा समाज निर्माण कर्ता तक ही समझा जबकि बंग जी गांधी को गुलामी से मुक्ति दिलाने वाले संधर्श कर्ता के रूप मे। राही जी की सुविधा भोगी टीम ने चालाकी से गंगा प्रसाद जी की भावनाओं को जागृत किया और रचना के विरूद्ध पडयंत्र समझा दिया जबकि यह संधर्श रचना के विरूध न होकर उसके साथ होना था। षराफत यदि चालाक लोगो का हथियार बन जावे तो बहुत नुकसान करती है । गंगा प्रसाद जी कभी रचना छोडकर संधर्श की लाइन मे गये नही। उन्हे यह महसूस हुआ कि लोक स्वराज्य अभियान गांधी के रचना प्रधान कार्यक्रम को क्षति पहुॅचायेगा इसलिये उन्होने पूरी इमानदारी से अपनी ताकत लगा दी, जैसा राही जी की टीम चाहती थी। यदि कोई भला आदमी संधर्श षील गांधी और रचनाकार गांधी का अन्तर बिना समझे ही निर्णायक भूमिका अदा करने लगे तो इसका कोई समाधान न बंग जी के पास है न इस टीम के पास। यही कारण है कि मैने गंगा प्रसाद जी की चर्चा करना ठीक नही समझा। हो सकता है कि अब भी वे गांधी के स्वतंत्रता संधर्श को समझ जावें और सुविधा भोगियों से दूरी बना लें।

KASHINDIA

भारत ही नही , पूरे विष्व मे एकमात्र गांधी ही ऐसे व्यक्ति हुए जिन्होने लोक स्वराज्य की इतनी स्पश्ट व्याख्या की तथा लोक स्वराज्य को विष्व की सभी समस्याओ का समाधान बताया। भारत मे सर्वोदय गांधी जी का अधिकृत वारिस है। सिद्धान्त रूप मे एकमात्र सर्वोदय ही है जो अकेन्द्रीकरण का भी अर्थ समझता है और विकेन्द्रीकरण का भी। साम्यवाद तो पूरी तरह इस सिद्धान्त के विरूध है । समाजवाद का जो अर्थ वर्तमान मे प्रचलित है वह भी किसी न किसी रूप मे राजनैतिक सत्ता को मजबूत ही करना चाहता है । संध को दाढी और चोटी से आगे कुछ समझना ही नही है। कांग्रेस समझती सब है किन्तु सुविधा भोगियों की जमात बन गई है। गांधीवादी ही एकमात्र ऐसे लोग है जो लोक स्वराज्य आंदोलन की पहल कर सकते है। और लोग इस पहल के साथ जुड तो सकते है किन्तु पहल के केन्द्र नही बन सकते । यही कारण है कि लोक स्वराज्य के लिये किये जाने वाले किसी भै आंदोलन की धुरी सर्वोदय से ही षुरू करने की इतनी आवष्यकता समझी गई। लोक स्वराज्य के विरोधियों की ताकत कोई मामूली तो है नही। यह संधर्श तो बहुत ही कठिन मार्ग है । जब गांधी को मानने वाले लोग तक सुविधाओ के स्वार्थ मे आंदोलन का विरोध करने तक नीचे आने की हिम्मत कर ले तो दूसरो से कितना विष्वास किया जावे। मै समझता हूँ कि भविश्य मे यदि कोई आंदोलन सफल होगा तो उसमें गांधी की महत्वपूर्ण भूमिका रहेगी ही भले ही आज उन्होने कितने भी प्रस्ताव क्यों व पारित कर लिये हों।

व्यवस्था परिवर्तन बिल्कुल अलग विशय है और व्यवस्था मे सुघार बिल्कुल अलग । व्यवस्था में सुधार के प्रयत्न व्यवस्था परिवर्तन मे बाधक होते है साधक नही। व्यवस्था मे सुधार की कोषिषे यथा स्थिति को बनाये रखेगी। परिवर्तन की दिषा को ये प्रयत्न हमेषा ही कमजोर करते है । गोविन्दाचार्य जी का नोटा या विदेषो मे जमा भारतीयो की ब्लैक मनी को लाने के प्रयत्न वर्तमान व्यवस्था में सुधार के प्रयत्न होने से स्वागत योग्य तो है किन्तु ये व्यवस्था परिवर्तन की दिषा मे बढा हुआ कोई कदम नही है । रामदेव जी का भश्टाचार विरोधी आंदोलन भी वैसा ही कदम है । मै मानता हूँ कि ये अच्छे लोग है तथा इनके कदम समाज के लिये लाभदायक भी होगे किन्तु इनमे से एक भी कदम न समाज सषक्तिकरण है न राज्य कमजोरीकरण। ये प्रयत्न समस्या निवारण मे सहयोगी हो सकते है जो समाधान नही है । यदि कोई सामाजिक व्यक्ति कोई राजनैतिक उदेष्यों के लिये ऐसे सुधारवादी प्रयत्न करे तो समझने की जरूरत है कि इनमे कहीं न कही लम्बे समय तक समाज को गुलाम बनाने की दबी हुई इच्छाएँ मौजूद है। समाज और राज्य के बीच की दूरी कम से कम मे हो यह गुलामी से मुक्ति का सार्थक प्रयत्न है। मै भी चौबीस तारीख के गोविन्द जी के कार्यकम मे था। मै उनके या ऐसे अन्य सुधारवादी प्रयत्नो का विरोधी नही किन्तु ये प्रयत्न व्यवस्था मे सुधार तक ही सीमित है , परिवर्तित नही कर सकते।

अग्रेजो के समय भी एक ग्रुप ऐसा था जो अंग्रेजो की व्यवस्था मे सुधार का पक्षधर था। इनमें राजा राम मोहन राय, मोतीलाल नेहरू, सभी साम्यवादी, संध के प्रमुख लोग आदि तो थे ही अम्बेडकर आदि भी ऐसे लोगों मे षामिल बताये जाते है। गांधी, सुभाश, भगतसिह आदि के स्वराज्य आंदोलन के गति पकडने के बाद ही इनमे से अनेक लोग इधर सकिय हुए थे। यह कोई विषेश बात न होकर स्वाभाविक प्रकिया मात्र होती है। ऐसे सुधार वादी आंदोलन से न तो ज्यादा उम्मीद करनी चाहिये न विरोध। यदि वर्तमान राजनैतिक सत्ता की जगह कुछ अच्छे लोग सत्ता मे आ जावे तो बुरा क्या है? किन्तु समाधान तो एकमात्र लोक स्वराज्य ही है।

पचीस दिसम्बर को मेरे किनारे होने से आंदोलन को कोई ज्यादा फर्क पडने वाला नही क्योकि मेरा लक्ष्य तो लोक स्वराज्य ही है किन्तु सर्वसेवा संध के प्रस्ताव का प्रभाव तो पडेगा ही । यदि अपने ही परिवार के कुछ लोग चुप भी रहते तो कोई अन्तर नही पडता किन्तु ये लोग तो राज्य की सुरक्षा मे ढाल बनकर सामने आ गये । आंदोलन की ऐसी योजना थी कि बहुत कम समय मे उसे चरम तक पहुँचा दिया जावे किन्तु अब आंदोलन लम्बे चलने की संभावना दिखने लगी है। एक दो माह मे और तस्वीर साफ होगी। षायद कुछ अच्छे लोगो को सुविधा भोगी लोगो के स्वार्थ की जानकारी हो जावे तो संभव है कि जल्दी ही परिणाम दिखे अन्यथा अब लोक स्वराज्य अभियान के समय वद्ध परिणाम मूलक परिवर्तन मे विलम्ब संभव है ।

पचीस दिसम्बर के बाद भी मै आप सबके साथ ही हूँ। मैने दायित्व और संगठन छोडा है कर्तव्य नही। आप सबको मेरी जब जहाँ जरूरत हो मै साथ हूँ। किन्तु अब आप सबको ही योजना बनानी है और आपको ही खडा होना है। चुनाव सुधार, भश्टाचार नियंत्रण वोटर पेंषन, स्वदेषी आदि के मुददो से टकराने का कोई लाभ नही। अपना साफ और सीधा लक्ष्य रखिये कि लोकतंत्र को लोकनियुक्त तंत्र से लोकनियंत्रित तंत्र मे बदलना है। जो इस दिषा मे काम करे वह मित्र , जो अन्य दिषा मे काम करे वह पडोसी और जो हमारी योजना के विरूध खडा हो वह षत्रु है। आप किसी व्यक्ति के पीछे न चलकर लक्ष्य को आधार बनाइये।

मैने बहुत समीक्षा करके ही नया मार्ग चुना है। मै समझता हूँ कि सत्ता लोलुप लोगो की संख्या एक प्रतिषत से भी कम है बाकी निन्यान्नवे प्रतिषत लोग सत्ता संधर्श से बाहर है । किन्तु ये लोग षान्ति से जीना चाहते है भले ही गुलामी ही क्यो न हो। ये अच्छे सम्मानित लोग है। ये संधर्श को बहुत नुकसान पहुँचा रहे है। गांधी जी को भी कोई कम मेहनत नही करनी पडी थी इन्हे समझाने मे। कई बार अनषन करके अपनी जान तक खतरे मे डालनी पडी थी। ऐसे संधर्श भीरू लोगो को समझाने का काम तो मै लगातार करता ही रहूँगा। आप संधर्श की योजना बनाइये। मै गंगा प्रसाद जी सरीखे लोगो के ह्दय परिवर्तन मे सक्रिय रहूँगा। जब तक षासन मुक्ति षोशण मुक्ति का सपना पूरा नही होता तब तक आराम हराम है के साथ लगे रहिये।

जो साथी संधर्श की क्षमता नही रखते वे मानसिक व्यायाम करें तथा प्रोत्साहित करें। ऐसे साथी आर्थिक सहायता भी करे।

जो इतना भी सक्षम नही है वे ज्ञानतत्व के कुछ ग्ग्रहक बना दें । कुछ न कुछ सहयोग करते रहिये। ईष्वर सफलता अवष्य देगा।

## कार्यालयीन प्रष्नो के उत्तर

प्रष्नः— सोमनाथ जी ने संसद में सांसदो के व्यवहार के विरूध तीखी टिप्पणी की। भावावेष मे उन्होने सांसदो को श्राप तक दे दिया। नवभारत चौदह मार्च को प्रकाषित लेख में विद्वान महेष परिमल जी ने सोम नाथ जी की सोच के प्रति समर्थन व्यक्त करते हुए भावना व्यक्त की है कि जनता सोमनाथ जी के अनुसार चुनावो मे ऐसे सांसदो को हरा दे तो अच्छा होता। परिमल जी ने लम्बे लेख मे अपने विचार व्यक्त किये है। आपने सोमनाथ जी के समर्थन मे कुछ नही लिखा । आपको भीकुछ लिखना चाहिये।

उत्तरः— मरीज के प्रति सहानुभूति व्यक्त करना अलग बात है और इलाज बताना अलग । सहानुभूति व्यक्त करने वाले सौ मे नब्बे मिल जाते है और न जानते हुए भी इलाज बताने वाले भी सौ मे दस मिल ही जाते है। किन्तु बीमारी को ठीक से समझकर इलाज बताने वाले अववाद स्वरूप ही कोई कोई मिलते है। भारत का लोकतंत्र बीमार हो गया है। सोमनाथ जी और महेष परिमल जी लोकतंत्र की सहानुभूति मे ऐसा कह रहे है या अनजान डाक्टर के रूप मे यह तो नही कहा जा सकता किन्तु इतने अनुभवी राजनीतिक विक्ष्लेशको द्वारा कही गई ऐसी बाते समस्या का समाधान नही है । यदि ऐसे सांसद हार जाये तो भी संसद तो बनेगी ही। संसद मे दल भी रहेगे और दल के आधार पर संस्कार भी। यदि सांसद बदल भी जावे तो संसद नही बदलने वाली। संसद का जो स्वरूप बन रहा है वह भारतीय संसदीय लोकतंत्र की विकृति है, सांसदो की नही। सांसद तो उस विकृति के आधार पर ढल रहे है। सांसद यदि नये भी आ जावे तो अव्यवस्था के कीर्तिमान तो नये नये बनते ही रहेगे। राजनीति एक व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा का रूप ले चुकी है जिसके सारे नियम कानून वे स्वय ही बनाते है। जब उनकी प्रतिस्पर्धा के न कोई नियम कानून बना सकता है न ही बीच मे रोक टोक सकता है तो जो कुछ हो रहा है वह तो होना ही है।

सोमनाथ जी और परिमल जी गंभीरता पूर्वक विचार करें कि इसमें जनता क्या करे? अच्छे व्यवहार वालो का चुनाव जीतना भी कठिन होता जा रहा है और यदि जीत भी जावे तो हुडदंग करने वालो पर नियंत्रण भी नही हो पा रहा । सोमनाथ जी ने एक आदर्ष लाइन ली कि लोकसभा अध्यक्ष पद पर रहते हुए अधिकतम तटस्थ रहे। क्या परिणाम हुआ उनकी आदर्ष लाइन का। हुडदंगी प्रकाष करात ने इनकी लाइन को अपनी बडी लाइन खीचकर छोटा कर दिया। इसलिये व्यक्ति से व्यवस्था बदलेगी इस गलत लकीर को पीटने से काम नही चलेगा बल्कि व्यवस्था से व्यक्ति बदलेगा इस नई लाइन का निर्माण करिये।

## पत्रोत्तर

श्री एम एस सिंगला, अजमेर, राजस्थान

प्रश्नः— आप लम्बे समय से जनता के बीच है । हर प्रकार के चरित्र से आप निपटते आये। मै आपको प्रकाष देने योग्य नही हो सकता। फिर भी कुछ बातो विचारो से अलोडित हो कुछ कहने को विवष हुआ महसूस करता हूँ।

उत्तर हर बात या प्रष्न का हो सकता है, होता है, उत्तर देना जरूरी नही हो सकता।

भाशा भाव सौम्य हो । भाशा कसैलापन लिये न हो । वह मुनि के अपुकूल हो अप्रिय उत्तर के प्रयास से बचे। मुनि का धर्म है मनन(चिन्तन) करना । वही आपका लक्ष्य है। स्वराज्य के लिये व्यवस्था परिवर्तन। अन्य प्रष्नो समस्याओ मे उर्जा खपाना कितना कारगर होगा विचारणीय है।

उत्तरः— समाज मे दो स्थितियॉ हुआ करती है 1. सामान्य काल 2. विषेश काल। सामान्य काल उसे कहते है जब समाज का वौद्धिक वर्ग किसी सीमा रेखा से अधिक उपर जाकर समाज के षेश वर्ग को ठगने धोखा देने या या षोशण करने मे संलग्न न हो। ऐसे समय मे समाज का संचालन ऐसे बौद्धिक वर्ग पर विष्वास करके छोडा जा सकता है तथा षेंश समाज की भावनाओ के माध्यम से अनुषरण का मार्ग बताया जा सकता है। सामान्य काल मे मुनि का कर्तब्य है किवह समाज को और अधिक ठीक से चलने का भावनात्मक मार्ग बतावे। किन्तु जब समाज का बौद्धिक वर्ग सारी सीमाओ को तोडकर स्वार्थ धोखा या षोशण की राह पर चलने की प्रतिस्पर्धा मे लग जावे तब समाज को ऐसे वर्ग पर विष्वास करके छोडना आत्मधाती कदम होगा। ऐसे समय मे मुनि का क्या कर्तव्य है इस विशय पर मनन करना आवष्यक है । मैने अपने पचीस दिसम्बर तक के सत्तर वर्शो मे पाया है कि विषेश काल मे समाज को भावनात्मक लाइन से हटाकर बौद्धिक दिषा मे प्रेरणा देनी चाहिये। अर्थात वर्तमान बौद्धिक नेतृत्व के समकक्ष एक नयी प्रतिस्पर्धा बौद्धिक चिन्तन खडा हो जो वर्तमान धूर्तता पूर्ण बौद्धिक नेतृत्व को चुनौती दे सके। यह काम अत्यप्त कठिन है किन्तु षुरूआत तो करनी ही होगी।

इस कार्य मे कठिनाई यह है कि इसके लिये भावनाओ पर चोट करके तर्क षक्ति को जागृत करना पडता है। यह काम बहुत सम्हाल सम्हाल कर करना पडता है क्योकि भावनाओ पर चोट लगने से सम्पर्कित व्यक्ति के दूर होने का खतरा बना रहता है । कई बार ऐसा हो भी चुका है। धूर्त लोग ऐसे भावना प्रधान लोगो की भावनाओ को भडकाने के अवसर भी खोजते ही रहते है। सर्वोदय मे तो हम लोग ऐसे प्रयत्नो से भारी नुकसान उठा भी चूके है। किन्तु इसका समाधान क्या है ? अनेक ऐसे भावना प्रधान लोग निरंतर ज्ञानतत्व पढते पढते भावना से हटकर तर्क की ओर बएने लगे है। ऐसी स्थिति मे नाराजगी का खतरा उठाना हमारी मजबूरी है।

मेरे पास सैकडो पत्र आते है। उनमे से दो चार का उत्तर देता हूँ। ऐसे उत्तर देने मे भी ऐसे लोगो को ही विषेश प्राथमिकता देता हूँ जो परिपक्क है। मैने ऐसे प्रमुख लोगो मे आपको षमिल रखा है जो ऐसे प्रष्नो द्वारा अन्य पाठको को लाभ पहॅुचाना चाहते है। मुझे पहली बार आभास हुआ कि आपकी भावनाओ को भी मेरे उत्तर से चोट लगी है अब भविश्य मे जब तक आप विषेश रूप से स्पश्ट उत्तर नही चाहेंगे तक तक मैं कोई उत्तर नही दूगा। ज्ञानतत्व विचार प्रचार के लिये बिलकुल भी नही है । जो लोग विचार मंथन से हटकर अपने या अपनी संस्था के विचार मीडिया से प्रचारित कराना चाहते है वे दुनिया भर मे फैली लाखो पत्र पत्रिकाओ का उपयोग कर सकते है। ज्ञानतत्व सम्पूर्ण विष्व की ऐसी पत्रिका हे जो सिर्फ विचार मंथन तक सीमित है।

इसलिये उचित होगा कि हमारे परिचित साथी मेरे प्रयत्नो को इस नजर से ही देखें। आपका उत्तर आयेगा तब आगे का सोचा जायगा।

मुझे लगता है कि मुनि के आदर्ष कार्य चिन्तन मनन और समाज अर्पण की दिषा मे मै अपनी क्षमता अनुसार ठीक दिषा मे लगा हूॅ। साधक जी से भी इस विशय मे मार्ग दर्षन मिलता रहता है । यदि इस विशय मे आप या कोई अन्य साथी और मार्ग दर्षन करें जैसा कि आपने इस पत्र मे प्रयास किया है तो मुझे उससे बहुत लाभ होगा।

आपने लिखा है कि व्यवस्था परिवर्तन या लोक स्वराज्य की अपेक्षा अन्य विशयो मे तर्क विर्तक करना लक्ष्य के लिये बाधक होगा। पचीस दिसम्बर के बाद लोक स्वराज्य य व्यवस्था परिवर्तन मेरा लक्ष्य न होकर बंग जी दुर्गा प्रसाद जी दुबे जी महावीर जी त्यागी जी खन्ना जी रणवीर षर्मा जी आचार्य पंकज जी धनष्याम जी, अषोक गाडिया जी आदि का लक्ष्य है और मै तो उनकी आवष्यकतानुसार उनका समर्थन या सहयोग ही कर सकता हुँ। मै तो अपना सारा समय विचार मंथन तक सीमित किया हूॅ। यदि ट्रस्ट का कोई अन्य निर्देष आया तो वैसा ही होगा अन्यथा विचार मंथन को प्राथमिकता तथा लोकस्वराज्य व्यवस्था परिवर्तन को सहयोग करता रहॅूगा विषेश चर्चा इसी अंक मे अन्यत्र है जो स्पश्ट करेगी। आषा है कि आपका मार्गदर्षन मिलेगा। जब तक किसी विशय पर आप सीधा प्रष्न नही करेगे तब तक आपको उत्तर देने से बचने का प्रयास किया जायगा।

## श्री पंथ राम वर्मा, मटंग जिला दुर्ग छत्तीसगंढ

मै बचपन से ही गांधी जी के विचारो से प्रभावित रहा । मेरे पिताजी भी स्वतंत्रता संग्रम से जुडे रहे तथा मै भी। स्वतंत्रता के बाद भी मै सर्वोदय से जुडा रहा तथा आज तक हूॅ। बीच मे मै मध्यप्रदेष भूदान यज्ञ बोर्ड भोपाल का अध्यक्ष भी रहा और अब तब षारीरिक रूप से अस्वस्थ किन्तु मानसिक रूप से पूर्ण स्वस्थ हू।

वर्तमान मे आपके प्रतिनिधि मंडल की मुलाकात महामहिम राश्टपति जी से हुई और आपके जो सवाल जबाब ज्ञान तत्व के अंक 170 मे छपे वह वहुत ही महत्वपूर्ण है। सांसद विधायक सदन मे अपने वेतन भत्ते का निर्धारण करते है यह मर्यादा के विरूध है। क्या कोई नौकर (प्रतिनिधि) अपना वेतन स्वय तय करेगा या उसका मालिक तय करेगा? निष्चय ही उसे अधिकार नही है लेकिन सविधान ने उसे अधिकार दे दिया हॅ। अतः संविधान बदलना जरूरी है । पर यह कितना कठिन कार्य है इसकी कल्पना नही की जा सकती।

अभी एकसप्ताह पूर्व पारिवारिक कार्यकम मे सांसद दुर्ग से मुलाकात हुई तो मैने आपके द्वारा राश्टपति जी से मिलकर चर्चा की बात का उल्लेख किया तो उन्होने कहा कि जो वेतन भत्ते मिलते है वह एक सप्ताह मे समाप्त हो जाता है। धर का पैसा काफी खर्च हो जाता है। तीन चार सौ लोग प्रतिदिन मिलने आते है। मुझे कहा कि आप स्वय आकर देख लीजिये। फिर और यह दलील दी कि संसद जो भी कानून बनाता है उसे जनता का समर्थन संविधान अनुसार माना जाता हे। मैने कहा कि हमारी राय मेयही गलत है और इसे सुधारना आवष्यक है।

अभी तक किसी संगठन या राजनैतिक दलो चाहे वे मार्क्सवादी ही क्यो न हो इस प्रष्न को नही उठाया है जिसे आपने उठाकर एक साहसिक कार्य किया है। इस बात की जानकारी समाचार पत्रो मे नही छपती है आप मीडिया से संपर्क स्थापित करके उन्हे प्रकाषनर्थ राजी करिये , दूसरा सुझाव यह कि क्या हम ज्ञानतत्व मे राश्टपति के साथ हुए सवाल जबाब को अपने जिले के स्थानीय समाचार पत्रो नव भारत, नई दुनिया , दैनिक भास्कर मे छपाये ? क्या यह अनधिकृत चेश्टा होगी कि अधिकृत माना जावेगा? सुझाव देने की कृपा करें। संचार माध्यम का उपयोग हम सबके कार्यो का नही हो पाता इसलिये अच्छा कार्य भी गौण हो जाता है।

दूसरा विशय ज्ञानतत्व के ग्राहक बनाने संबंधी। मैने व्यक्तिगत रूप से षायद एक दो बार ही चंदा दिया है फिर भी पत्रिका लगातार नियमित रूप से आ रही हॅै यह आपकी सौजन्यता का प्रतीक है। मै स्वय का तो भेजूगा और प्रयास रहेगा कि मुझसे मिलने आने वाले मित्रो को भी ग्राहक बनाउ। मेरे पास मैत्री षांति सेवक सर्वोदय जगत गौविज्ञान भारती और आपका ज्ञान तत्व आता है कमषः पवनार आश्रम देवनार कनलख्नना वाराणसी इदौर अम्बिकापुर से प्रकाषित होते है सबका उदेष्य सर्वोदय होते हुए भी कार्य क्षेत्र अलग अलग है आध्यात्म + विज्ञान – सर्वोदय, गोहत्या बंदी माने सर्वोदय , सर्वसेवासंध माने संपूर्ण क्रांति ही सर्वोदय समाजिक चेतना व अधिकार माने सर्वोदय लोकस्वराज्य मुझे ज्ञात नही कि आप के पास ये पत्रिकाए आती है या नही? अगर सभी एक होकर कार्यारंभ करे तो लक्ष्य साध्य तक पहुचने मे देरी नही होगी।

पर अपने देष का दुर्भाग्य ही कहा जायगा कि दो विद्वान एक मत नही हो सकते नही तो गायत्री परिवार रामायण परिवार सांई बाबा , आषा राम बापू इन सबके पीछे कितने लोग पडे है।

मुझे जो विशय महत्व पूर्ण लगा वह है रामानुजगंज नगर पालिका चुनाव का तरीका अगर इसे षासन मान्य न करे तो भी अपनी राह आगे बढना जरूरी है। आपने तो इसके पूर्व भी प्रयोग करके सफलता पायी है देष भर का एक वही स्थान आदर्ष बनकर सारे देष का मार्ग दर्षन कर सकता है अगर कही भी नया वैज्ञानिक षोध होता है तो उसका असर पूरी दूनिया मे होता है ।

चलिये रामानुजगंज से निकलकर गग्रम पंचायतो नगर पंचाचतो जनपदो एव जिला पंचायत तक इस प्रणाली को आगे बढाइये मुनि का काम मनन करके विचार देना है इस तरह चुनाव (मनाव) होता है तो सर्वोदय की दिषा मे बढ सकते है।

उत्तरः— आपकी जीवनी और त्याग तपस्या के विशय मे दुर्ग आते जाते कई मित्रो से सुनने को मिला। आपके मन मे इस उम्र मे पीडा है यह बात बिल्कुल सच है। आप सर्वोदय के साथ जुडे है और सर्वोदय एकमात्र ऐसी विचार धारा है जो लोक स्वराज्य को अन्दर तक समझती है । मैने न गांधी को ज्यादा पढा न समझा। बंग जी आदि ने चौरासी के बाद मुझे जो बताया उसमे से मै इतना ही समझ पाया कि गांधी का अर्थ है सत्य और अहिंसा के मार्ग से षासन मुक्ति षोशण मुक्ति के लिये निरंतर सधर्श । बाकी

KASHINDIA

गांधी को न मै समझा और न समझने को कोषिष किया। आप लोगो का सौभाग्य है कि आप गांधी को भी बहुत दूर ते समझे है और सर्वोदय के भी साथ है।

आज देष को सत्य और अहिंसा के नेतृत्व मे षासन और षोशण के विरूध संधर्श की आवष्यकता है। ठाकुर दास जी बंग के नेतृत्व मे इस संधर्श की धोशणा हुई है । गंगा प्रसाद जी अग्रवाल इस योजना को रचना और निर्माण मे बाधक मान रहे है। राही जी वगैरह के विरोध का तो कोई प्रभाव नही होगा क्योकि पिछले समय से ही राही जी का सुविधा भोगी आचरण सर्व विदित है किन्तु गंगा प्रसाद जी की टीम को समझाने की जरूरत है। वे आंदोलन के पक्ष मे नही है तो दूर रह सकते है किन्तु उनके विरोध की बात समझ से परे है। मै न तो सर्वोदय मे हूॅ न ही बंग जी के लोक स्वराज्य अभियान मे । मेरा इस संबंध मे कुछ कहना उनके आंतरिक मामलो मे हस्तक्षेप होगा। किन्तु मुझे लगता है कि बंग जी का आंदोलन समय की आवष्यकता है। आप सब सर्वोदय के लोग यदि गंगा प्रसाद जी आदि को समझा सकें जो निर्णायक आंदोलन की रूपरेखा बन सकती है।

आपने दुर्ग के सांसद का उत्तर सुन ही लिया है । ये लोग कितने निर्लज्ज भाव से उत्तर देते है यह इसका प्रमाण है। इतने वेतन भत्ते से तो उनका एक चौथाई भी खर्च पूरा नही होता होगा। यदि सारा भारत उन्हे सौंप दे तो भी पूरा नही होगा क्योकि अभी हजारो कार्यकर्ता उनके द्वार मे प्रतिदिन आते है तो बाद मे करोडो प्रतिदिन आने लग जायेगे जिनका सारा खर्च हमे ही उठाना होगा। आप उत्तर से समझ सकते है कि आंदोलन कितना जरूरी है ।

राश्ट्रपति जी से जो चर्चा हुई है वह सार्वजानिक है, गुप्त नही। भोपाल के निर्दलीय साप्ताहिक ने लिखा भी है। आप भी अवष्य ही अखबारो मे बयान देवे। इससे लाभ ही होगा।

मेरे पास भी ये कई पत्रिकाऍ आती है। पढता भी हूॅ। इसी तरह तो धीरे धीरे रामानुजगंज मे नगर प्रमुख का निविरोध निर्वाचन सम्पन्न कराना संभव हुआ। भिन्न भिन्न राजनैतिक विचारो के लोग एक साथ बैठकर विचार विमर्श करे और कुछ नतीजे तक पहूॅचे यह एक विषेश बात तो है ही। अब दस गांवो मे ग्राम प्रमुख चुनने की तैयारी है। वर्तमान सरकारी पंचायतो से भी अधिक मजबूत सामाजिक पंचायतो का गठन क्रान्तिकारी कदम है । इस कार्य का भी सम्पूर्ण श्रेय वहॉ की टीम का ही है क्योकि अब उसमे भी मेरी सहभागिता न के बराबर ही है। कभी इधर आना हो तो मिलेगें या दुर्ग तरफ आ सका तब तो मिलूंगा ही।

KAASH INDIA